परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.)

सत्रीय कार्य (Assignment)

(जुलाई, 2025 एवं जनवरी, 2026 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : **MSK-003**
दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मिमांसा

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.–003)

दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मिमांसा
सत्रीय कार्य (2025–26)

पाठ्यक्रम कोड : MSK-003/2025-26

प्रिय छात्रों/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जॉच स्तरीय कार्यक्रम का उद्देश्य यह जांचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है बल्कि अध्ययन के दौरान जो कुछ सिखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये–

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित है:

अनुक्रमांक :.....
नाम :.....
पता :.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :.....
सत्रीय कार्य कोड :.....
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :.....
दिनांक :.....

3) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5) सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निम्न निर्धारित तिथि तक तवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026
जनवरी 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगाः

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। पुनः इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए तथा प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।
3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
   ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
   ड.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।
4. **प्रस्तुतिः** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएं, तो उसको साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
5. **विशेषः** अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोट : विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

सत्रीय कार्य

MSK–003 दर्शनः न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

पाठ्यक्रम कोड –MSK: 003
पाठ्यक्रम शीर्षक – दर्शनः न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा
सत्रीय कार्य – MSK –003/TMA/2025–2026
पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अधोलिखित में से किन्ही तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 15X3= 45

(क) प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गीपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनन्तु।।

(ख) हेतुमदनित्यमव्यापि, सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं, विपरीतमव्यक्तम्।।

(ग) अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्।।

(घ) ऊहः शब्दोऽध्ययनं दुःखविघातास्त्रयः सुहृत्प्राप्तिः।
दानं च सिद्धयोऽष्टौ सिद्धेःपूर्वोऽङ्कशस्त्रिविधः।।

(ङ) तत्र जरामरणकृतं दुःखं प्राप्नोति चेतनः पुरुषः।
लिङ्गस्याविनिवृत्तेस्तस्माद् दुःखं स्वभावेन।।

(च) वत्सविवृद्धिनिमित्तं क्षीरस्य यथा प्रवृत्तिरज्ञस्य।
पुरूषविमोक्षनिमित्तं तथा प्रवृत्तिः प्रधानस्य।।

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 7X5= 35

2. वेदान्त के अनुबन्धचतुष्ट्य की विवेचना कीजिए।
3. साधनचतुष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।
4. परिणामवाद एवं विवर्तवाद में भेद स्पष्ट कीजिए।
5. वेदान्तविद्या का अधिकारी होने के लिए क्या अपेक्षित है।
6. गुणत्रय का निरूपण कीजिए।
7. सांख्य के अनुसार सृष्टि कितने प्रकार की होती हैं।
8. कर्म कितने प्रकार के होते हैं; स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए। 10X2= 20

9. नासतो विद्यते भावो नाऽभावो विद्यते सतःय इस उक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए तथा कार्य उत्पत्ति की पांच युक्तियों की चर्चा कीजिए।
10. भारतीय दर्शन परंपरा में अन्नम्भट्ट के योगदान को रेखांकित कीजिए।
11. धर्म का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी भावना तथा वेद की अपौरुषता पर प्रकाश डालें।